खुदा ढूँढ ही लेगा|

"पता भी न चले ऐसा किस्सा तो जरुर मिलेगा|
मन के भीतर अंधियारे में ऊजियाला खिलेगा|
लोगों को दिया घाव फिर से जो हरा होगा|
तो अंत में खुदा भी हमें जरुर ढूँढ लेगा|"

कितनी देर तक भागते रहोगे? नजाने कितनी दूर भागते रहोगे? अंत में क्या हांसिल करोगे? एक न एक दिन कहीं न कहीं तो ठहेरोगे? क्योंकि अपनीही परछाई को तुम यूहीं समेट नहीं सकोगे| अपने कर्मों कि दास्ताँ यूहीं तोहफे में जरुर पाओगे| जाने-अंजाने में ही सही, पर कभी जो बीज बोए थे, उसके उपहार तो जरुर रास्ते में मिलेंगे|

यकीन नहीं होता ना? पर देखके तो मै भी दंग रह गया था| महसूस कर मै भी चौंक गया था| कई दिनों के बाद अपने पुराने किस्सों को, दूर से चले आ रहे देख पा रहा था|
शायद ये हम सभी के साथ जरुर होता है, पर महेसूस कुछ देर के बाद ही होता हैं| अच्छा-बूरा जो भी हो, उसका थोडा थोडा आगास दिखने लगता है|

जो कभी हमने किसिको भला बुरा कह दिया हो,
या फिर किसिको जाने अंजाने में चोट पहोंचाई हो,
या किसीके के साथ अच्छा बुरा जो भी पल गुजारा हो,
उसका दीदार हमें एक न एक दिन जरुर होता है| कहीं न कहीं वोह पल फिरसे हमारे करीब आता है| वोह फिर आके हमसे टकराता है|

फिरसे हमें शर्मिंदा करने नहीं बल्कि गिले-शिकवे सब कुछ भूलाकर एक नए सिरे से आगे बढ़ने को कहेता है| ईस बार वोह हमें, खुदको संभलकर चलने को और ऊसी रास्ते पर चले ऊन अजनबीयों को भी नई सिख देने को कह जाता है| जो गलतियां हमसे हुई है, वह दुबारा हमसे और दूसरो से भी न हो ऐसी सोच हमारे दिलों में जरुर भर देता है|

भीड़ में चाहे हम अकेले भी क्यों न पड गए हो, ऊन हजारो में भी खुदा हमें जरुर ढूँढ लेता है| और हमें हर वक़्त सही राह दिखलाता है| पुरानी यादों को कोई न कोई झरिये, फिरसे तरोताज़ा करके हमें एक नई सोच दिलाता है|

"वजह चाहे कोई भी रही हो|
खुशनुमा तो हमें हर दम अब रहेना है|
गलतियों कि बौछार कितनी भी सुलगी क्यों न हो|
अब तो हमें खुद संभलकर, दूसरो को भी संभालना है|
क्योंकि खुदा को भी हमें ढूँढकर, अपने साथ जो ईस बार चलना है|"